>

Title : Need for adequate jute bags for foodgrains in Madhya Pradesh.

श्रीमती सुषमा स्वराज (विदिशा): धन्यवाद सभापति जी। मैं स्पीकर साहिबा की विशेष अनुमति से एक तात्कालिक महत्व का विषय इस सदन में रखना चाहती हूं।

मैं मध्य प्रदेश के विदिशा संसदीय क्षेत्र का प्रतिनिधित्व इस सदन में कर रही हूं। मध्य प्रदेश का गेहूं और विशेष तौर पर मेरे संसदीय क्षेत्र विदिशा का शरबती गेहूं विश्व भर में विख्यात है। मैं गर्व से यह बात कहती हूं कि मध्य प्रदेश केन्द्रीय पूल में बहुत भारी मात्रा में गेहूं देता है। पिछले वर्ष 50 लाख मीट्रिक टन गेहूं का उपार्जन मध्य प्रदेश से हुआ था। मध्य प्रदेश सरकार के द्वारा कृषि क्षेत्र में चलाई जा रही विभिन्न विकास योजनाओं के कारण इस वर्ष यह उपार्जन बढ़कर 80 लाख मीट्रिक टन होगा, लेकिन मुझे दुख से कहना पड़ता है कि हमारे किसान बारदाने को तरस रहे हैं। बारदाना यानि बोरियां। उनकी फसल कटी हुई खेत में पड़ी है, लेकिन फसल भरने के लिए बोरियां उपलब्ध नहीं हैं। मुझे दुख से यह कहना पड़ता है कि यह गंभीर संकट जो आया है, अचानक नहीं आया है। मध्य प्रदेश सरकार ने अपनी जरूरत का पूर्व आकलन करते हुए, 2,69,000 गठानें केन्द्र सरकार से मांगी थीं, अपनी मांग पहले लिखकर दे दी थी और 468 करोड़ रुपये की अग्रिम राशि भी जमा करा दी थी। उसके बावजूद अप्रैल का अंतिम सप्ताह चल रहा है, लेकिन हमारे यहां अभी लगभग एक लाख गठानें आनी बाकी हैं। आज सुबह मैंने विदिशा से जानकारी ली है, 16,000 गठानें अकेले विदिशा को चाहिए थीं, लेकिन वहां अभी तक केवल 5,700 गठानें ही पहुंची हैं यानि 10,000 से ज्यादा गठानें अकेले विदिशा क्षेत्र को आनी बाकी हैं। मैं यह कहना चाहती हूं कि फसल कटी हुई पड़ी है, अगर बरसात आ गयी, तो पकी-पकाई फसल बर्बाद हो जाएगी और किसान सिर पर हाथ रखकर रोएगा।

इसलिए मैं आपके माध्यम से कहना चाहती हूं कि खाद्य प्रबंधन की यह जो दुर्दशा देश में है, जब हम खाद मांगते हैं फसल बोने के समय, तो किसान को खाद नहीं मिलती, जब फसल पककर आ जाती है, तो भरने के लिए बोरियां नहीं मिलतीं और जब बोरियां मिल जाती हैं, तो रखने के लिए गोदाम नहीं मिलते। हमने यह भी कहा केन्द्र सरकार को, मध्य प्रदेश सरकार ने लिखकर कहा कि अगर आपके पास नया बारदाना उपलब्ध नहीं है, तो पुरानी इस्तेमाल की गयी बोरियों को दुबारा इस्तेमाल करने की हमें इजाजत दे दो, वह इजाजत भी हमें नहीं मिली। हमने यह कहा कि अगर जूट की बोरियां उपलब्ध नहीं हैं, तो हमें प्लास्टिक की बोरियां फिलहाल इस्तेमाल करने की इजाजत दे दो, वह इजाजत भी हमें अभी तक नहीं मिली। आज हारकर मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री स्वयं यहां संबंधित मंत्री से मिलने आ रहे हैं, लेकिन जो बात मैं आपसे कह रही थी कि खाद्य प्रबंधन का यह कुचक्र है कि बोने के समय खाद नहीं, फसल पक जाने के बाद बोरियां नहीं और बोरियां हो जाएं, तो उनको रखने के लिए स्टोरेज नहीं, गोदाम नहीं है। कितनी बार हरसिमरत बादल जी यहां पंजाब में स्टोरेज की कमी का मामला उठा चुकी हैं। राजनाथ सिंह जी ने सड़ा हुआ अनाज यहां लाकर सदन के पटल पर रखा है, स्पीकर साहिबा को चेंबर में दिखाया है। 58,000 करोड़ रुपये का अनाज इस देश में हर वर्ष सड़ जाता है और इस साल का आकलन है कि 80,000 करोड़ रुपये का अनाज सड़ जाएगा।

इसलिए मैं आपके माध्यम से कहना चाहती हूं कि मध्य प्रदेश का किसान खून-पसीना बहाकर 80 लाख मीट्रिक टन अनाज इस साल आपको देने वाला है, लेकिन उसको अगर बोरियां न उपलब्ध कराई जाएं, तो इससे बड़ा अन्याय नहीं हो सकता है। मैं आपके माध्यम से सरकार से कहना चाहती हूं कि मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री आज यहां आ रहे हैं, आप उनको यह बारदाना उपलब्ध करवाकर भेजिए और विशेष तौर पर विदिशा के वे किसान जो त्राहि-त्राहि कर रहे हैं, कोहराम मचा हुआ है, जल्दी से जल्दी उनको बोरियां उपलब्ध कराइए ताकि किसानों को इस समस्या से निजात मिल सके।

MR. CHAIRMAN :

Shrimati Sumitra Mahajan,

Shri Kailash Joshi,

Shri Arjun Ram Meghwal and

Shri Virendra Kumar are allowed to associate with the matter raised by Shrimati Sushma Swaraj.

श्री हुक्मदेव नारायण यादव (मधुबनी): बिहार में भी बोरी उपलब्ध नहीं है।...(व्यवधान)

श्री हरिन पाठक (अहमदाबाद पूर्व): महोदय, मंत्री को रिप्लाई देनी चाहिए।...(व्यवधान) प्रतिपक्ष के नेता ने एक बात सदन के सामने कही है, मिनिस्टर इसका उत्तर दें।...(व्यवधान)[r4]

श्री शरद यादव (मधेपुरा): महोदय, पूरे देश में स्टोरेज का संकट पैदा हो गया है। सुषमा जी ने जो भी बातें कही हैं, उन पर सरकार कोई ध्यान नहीं दे रही है। अगर इन बातों पर ध्यान न दिया गया, तो देश में तबाही मच जाएगी। देश में अनाज का जो संकट पैदा होगा, उसका अंदाजा सरकार को नहीं है। यह बात सही है कि ऐसा केवल मध्य प्रदेश में ही नहीं है, बल्कि पूरे देश में हो रहा है। जहां गेहूं पैदा होता है, वहां की बुरी हालत के बारे में मैं आपको बता नहीं सकता हूं। आज किसान अपनी फसल पैदा करके रो रहा है।

MR. CHAIRMAN: This is a very important issue which is being raised in the House. The Government will take note of that. We will now move on to the next item.